Roll No. ..... Total Pages : 4

MDE/M-21 **10248**

आधुनिक गद्य साहित्य

Paper–VIII-HI-108

Time : Three Hours] [Maximum Marks : 80

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **तीन** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। खण्ड (अ) व (आ) में से किसी एक गद्यांश की व्याख्या अनिवार्य है।

खण्ड-अ

(क) दुख और सुख तो मन के विकल्प हैं। सुखी वह है जिसका मन वश में है, दुखी वह है जिसका मन परवश है। परवश होने का अर्थ है खुशामद करना, दाँत निपोरना, चाटुकारिता, हाँ–हजूरी। जिसका मन अपने वश में नहीं है वही दूसरे के मन का छंदावर्तन करता है, अपने छिपाने के लिए मिथ्या आडंबर रचता है, दूसरों को फंसाने के लिए जाल बिछाता है।

(ख) कविता मनोवेगों को उत्तेजित करने का एक उत्तम साधन है। यदि क्रोध, करुणा, दया, प्रेम आदि मनोभाव मनुष्य के अन्त:करण से निकल जाएं तो वह कुछ भी नहीं कर सकता। कविता हमारे मनोभावों को उच्छ्वसित करके हमारे जीवन में एक नया जीव डाल देती है। हम सृष्टि के सौन्दर्य को देखकर मोहित होने लगते हैं। कोई अनुचित या निष्ठुर काम हमें असह्य होने लगता है। हमें जान पड़ता है कि हमारा जीवन कई गुना अधिक होकर समस्त संसार में व्याप्त हो गया है।

(ग) हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिन्तन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो, जो हममें गति और बेचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं, क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।

खण्ड-आ

(घ) प्रथम यौवन मदिरा से मत्त, प्रेम करने की थी परवाह
और किसको देना है हृदय, चीन्हनें की न तनिक थी चाह।
बेच डाला था हृदय अमोल, आज वह मांग रहा था दाम
वेदना मिली तुला पर टोल, उसे लोभी ने ली अनमोल।

(ङ) सेनापति, देखो उन कायरों को रोको। उनसे कह दो कि रणभूमि में पर्वतेश्वर पर्वत के समान अचल है। जय-पराजय की चिंता नहीं, एक बार इन दस्युओं को बतला देना होगा कि भारतीय लड़ना भी जानते हैं। पानी की जगह वज्र बरसें। सारी गज सेना छिन्न-भिन्न हो जाए, रथी-विरथी हों, रक्त के नाले धमनियों से बहें, परंतु एक पग भी पीछे हटना पर्वतेश्वर के लिए असंभव है। धर्मयुद्ध में प्राण भिक्षा गांहने वाले हम भिखारी नहीं। जाओ, एक बार उन भगोड़ों से जननी के स्तन्य की लज्जा के नाम पर रूकने को कहो। उनसे कहो, कि मरने का क्षण एक ही है, जाओ।

(च) यह स्वप्नों का देश, यह त्याग और ज्ञान का पालना, यह प्रेम की रंगभूमि—भारत भूमि क्या भुलाई जा सकती है? कदापि नहीं? कदापि नहीं। अन्य देश मनुष्यों की जन्मभूमि है। यह भारत मानवता की जन्मभूमि है। (3×7=21)

2. किन्हीं **तीन** का उत्तर लिखिए:

(क) महादेवी वर्मा के साहित्यिक अवदान पर सारगर्भित लेख लिखिए।

(ख) 'पथ के साथी' के आधार पर सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

(ग) 'पथ के साथी' के आधार पर सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

(घ) 'पथ के साथी' के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

(ङ) 'पथ के साथी' के आधार पर रवींद्रनाथ टैगोर के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

(च) 'पथ के साथी' के आधार पर महादेवी वर्मा की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए। (12×3=36)

3. किन्हीं **पाँच** पर टिप्पणी कीजिए। प्रत्येक टिप्पणी लगभग 250 शब्दों में हो।

(क) माखन लाल चतुर्वेदी की एक कृति का परिचय।

(ख) विष्णु प्रभाकर।

(ग) शंकर शेष का साहित्यिक परिचय।

(घ) कलम का सिपाही।

(ङ) उपेंद्रनाथ अश्क की कृतियों की मूल संवेदना।

(च) उत्तरयोगी।

(छ) क्या भूलूं क्या याद करूं।

(ज) भारतेंदु हरिश्चंद्र का साहित्यिक योगदान।

(झ) लक्ष्मीनारायण लाल का साहित्यिक परिचय।

(ञ) राहुल सांकृत्यायन के साहित्य की मूल संवेदना। (5×3=15)

4. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) चंद्रगुप्त नाटक की रचना किस वर्ष में हुई थी?

(ख) 'कविता अपनी मनोरंजन शक्ति द्वारा पढ़ने या सुनने वाले का चित्त रमाए रहती है, जीवन पट पर उक्त कर्मों की सुन्दरता या विरूपता अंकित करके हृदय के मर्मस्थलों का स्पर्श करती है', यह कथन किस निबंध से है।

(ग) 'पथ के साथी' में कुल कितने साहित्यकारों का परिचय है।

(घ) 'जो समझता है कि वह दूसरों का उपकार कर रहा है वह अबोध है, जो समझता है कि दूसरे उसका अपकार कर रहे हैं वह भी बुद्धिहीन है', यह कथन किस निबंध से है।

(ङ) चंद्रगुप्त नाटक में कुल कितने गीत हैं।

(च) चंद्रगुप्त नाटक में गांधार नरेश की पुत्री और आंभीक की बहन कौन है? 'हमें सुंदरता की कसौटी बदलनी होगी', कथन किस साहित्यकार ने किस निबंध में कहा है।

(छ) 'संस्कृत भाषा ने शब्दों के संग्रह में कभी छूत नहीं मानी। न जाने किस-किस नस्ल के कितने शब्द उसमें आकर अपने बन गए हैं।' यह कथन किस निबंध से है। (8×1=8)